सम्पादक के नाम

ठेका मजदूरों को यूनियन में शामिल करने से बौखलाये मालिक

उनके वफादार श्रम विभाग ने भेजा रजिस्ट्रेशन रद्द करने का नोटिस

महोदय ,

बेलसोनिका ऑटो कॉम्पोनेंट इंडिया एम्पलाई यूनियन आप सभी मजदूरों से मुखातिब है। हमारी यूनियन ने मजदूरों की वर्गीय एकता को मजबूत करने के लिए फैक्ट्री में हमारे साथ कार्यरत ठेका श्रमिकों को यूनियन की सदस्यता दी। सदस्यता देने से पहले हमने अपने यूनियन के संविधान में संशोधन कराया था जिसे ट्रेड यूनियन रजिस्ट्रार हरियाणा द्वारा स्वीकार कर लिया गया था।

ठेका मजदूर को सदस्यता देने पर ट्रेड यूनियन रजिस्ट्रार हरियाणा द्वारा यूनियन को एक गैर कानूनी नोटिस दिया गया कि आपने ठेका मजदूर को यूनियन की सदस्यता दी है तो क्यों ना आपकी यूनियन के पंजीकरण को रद्द किया जाए? ट्रेड यूनियन रजिस्ट्रार द्वारा किया गया यह नोटिस ट्रेड यूनियन एक्ट 1926 की अवमानना है। ट्रेड यूनियन एक्ट 1926 अंग्रेजों के समय मजदूर संघर्षों की बदौलत मजदूरों को हासिल हुआ था जिसके तहत मजदूर अपनी यूनियन बनाकर सामूहिक मोलभाव कर अपनी दयनीय जीवन प्रस्तुतियों व कार्य पर तिथियों के सुधार के लिए संघर्ष करते थे यह वह समय था जब दुनिया में मजदूरों ने अपने राज काम कर लिए थे मजदूर आज एक कोरा सपना नहीं बल्कि हकीकत बन चुका था ऐसे में मजदूरों की लड़ाई को कानूनी दायरे में समेटने और सुधार तक सीमित करने के उद्देश्य से मजदूरों को संगठित होने के कानूनी अधिकार दिए गए थे

हम सभी मजदूर साथी अपने व्यवहार से यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि अकेले-अकेले मजदूर कुछ भी नहीं होता। संगठित यूनियन में एकताबद्ध हुए बिना मजदूरों की हालत गुलामों जैसी होती है । अपने ऊपर हो रहे शोषण उत्पीड़न के विरुद्ध मजदूर खुद को असहाय पाता है । अपनी जलालत और असहाय अवस्था के लिए जब वह खुद को यूनियन में संगठित कर लेता है तब एक जुझारू ताकत के तौर पर सामने आता है और अपने सामूहिक शोषण उत्पीड़न के खिलाफ आवाज बुलंद करता है। पूंजीपति कारखानों के मालिक को सबसे बड़ा डर मजदूरों की संगठित ताकत से लगता है। मजदूरों की यूनियन में एकजुटता केवल एक कागज का टुकड़ा मात्र नहीं होता बल्कि वह जमीनी तौर पर सामूहिक हितों की एकजुटता होती है।

मजदूर अपनी वर्ग एकजुटता कायम ना करें इसके लिए पूंजीपति वर्ग क्षेत्रवाद जातिवाद सांप्रदायिक उन्माद आदि विभाजन पैदा कर उनके खून को चूसता रहता है। पिछले 3 दशकों से शासक वर्ग ने उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण की पूंजी पस्त नीतियों के तहत मजदूर वर्ग पर चौतरफा हमला बोल दिया है। यह उदारीकरण की नीतियों का ही परिणाम है कि फैक्ट्रियों के अंदर बड़े पैमाने पर मुख्य उत्पादन में गैरकानूनी तरीके से ठेका मजदूरों से उत्पादन कार्य कराया जा रहा है। जिससे की फैक्ट्री के अंदर स्थाई मजदूरों की संख्या बहुत कम हो गई है जिसका परिणाम यह है कि फैक्ट्री में यूनियन कमजोर हो रही हैं।

44 केंद्रीय श्रम कानूनों को खत्म कर लाए जा रहे लेबर कोर्ट ने इस प्रक्रिया को और भी बढ़ा दिया है। प्रशिक्षण के नाम पर भर्ती किए जा रहे मजदूरों को तो मजदूरों की परिभाषा से ही गायब कर दिया गया है। नीम ट्रेनी फिक्स टर्म एंप्लॉयमेंट इत्यादि के तहत मजदूर भर्ती किए जा रहे हैं। जिससे स्थाई मजदूरों की संख्या फैक्ट्रियों में ना के बराबर रह जाएगी। जिससे कि यूनियनों की स्थिति और भी गर्त में पहुंचा दी जाएगी। नए लेबर कोर्ट मजदूरों की बची खुची स्थिति को गुलामी में धकेल देंगे।

प्रबंधन कानूनी प्रावधान होने के बावजूद भी स्थाई मजदूरों तथा ठेका मजदूरों को एक साथ एक यूनियन में संगठित नहीं होने देना चाहते। स्थाई मजदूरों की यूनियन अपनी तादाद की वजह से इतनी मजबूत नहीं होती कि वह सामूहिक मोलभाव मजबूती के साथ कर पाए। स्थाई और ठेका मजदूरों की एकता सामूहिक समझौतों के लिए मजदूरों के संघर्ष को जुझारू बनाने के लिए रणनीतिक जरूरत है और प्रबंधन ऐसा नहीं होने देना चाहता। प्रबंधन स्थाई और ठेका मजदूरों की एकता ना बने इसके लिए मजदूरों के बीच फुट डलवाने का माहौल बनाता है

हमारी फैक्ट्री में भी 2014 में जब यूनियन बनाई गई थी तब 89 स्थाई मजदूर थे। जबकि कुल मजदूरों की तादाद लगभग हजार थी जब तक हमने हजार मजदूरों की वर्ग एकता नहीं बनाई तब तक श्रम विभाग के दफ्तरों और कोर्ट कचहरी पर मिन्नते ही करते रहे। उस समय हमारी वर्गीय एकता के सामने प्रबंधन को झुकना पड़ा और स्थाई मजदूरों की तादाद 700 करनी पड़ी। प्रबंधन सदैव हमारी एकता को तोड़ने के लिए नित नये षडयंत्र रचता रहता है।

हमारी तादाद को कम करने के लिए प्रबंधन ने सालों साल काम कर रहे उन मजदूरों को फर्जी कहना शुरू कर दिया जिनके बल बूते अकूत धन व अनेकों अवार्ड कमाये। मजदूरों को फर्जी बताकर उनकी छंटनी करना? चाहता है।

साथियों आज श्रम विभाग नंगा होकर प्रबंधकों के इशारे पर नाच कर रहा है । हमारी यूनियन के पंजीकरण को रद्द करने का गैर कानूनी नोटिस भेज रहा है। ऐसे में हम सभी मजदूरों को वर्ग के तौर पर एकजुट होकर इसका मुंहतोड़ जवाब देना होगा। सभी मजदूर यूनियनों, संगठनों, छात्रों एवं नौजवानों, महिलाओं ,बुद्धिजीवियों तथा इंसाफ पसंद जनता का आह्वान करती है कि मजदूरों के संगठित होने के अधिकार पर हमले के खिलाफ मजदूर सम्मेलन में शामिल हो।

मांग :

घोर मजदूर विरोधी चार लेबर कोड्स रद्द करो, ट्रेड यूनियन रजिस्ट्रार हरियाणा द्वारा बेलसोनिका यूनियन के पंजीकरण को रद्द करने की धमकी के साथ भेजे गए कारण बताओ नोटिस को वापिस लो, मजदूरों को ठेका व स्थाई में बांटकर उनकी वर्गीय एकता को तोड़ना रद्द करो और मजदूरों की खुली-छिपी छंटनी करना बंद करो।

कार्यक्रम : स्थल मजदूर सम्मेलन
स्थान : लघु सचिवालय गुरूग्राम
दिनांक : 12 फरवरी 2023
समय सुबह 10 बजे से
दोपहर 2.00 बजे तक

Paytm
MM
Majdoor Morcha
UPI ID: 8851091460@paytm
8851091460
Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

नगर निगम चुनाव

सस्ती लोकप्रियता पाने को तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे नेतागण

फरीदाबाद (विकास शर्मा) निगम पार्षदों का कार्यकाल समाप्त हुए काफी समय हो चुका है। लेकिन अभी तक निगम चुनावों की तारीखों का ऐलान नहीं हुआ है। कयास यह लगाए जा रहे थे कि फरवरी में चुनाव हो सकते हैं लेकिन दोबारा वार्डबंदी होने की वजह से तारीख निश्चित नहीं हो रही है। पार्षद चुनाव को लेकर सभी दलों ने अपनी कमर कस रखी है। प्रत्येक पार्टी के नेता फ्लेक्स बोर्ड के माध्यम से अपने आप को भावी पार्षद उम्मीदवार के रूप में जनता के सम्मुख एकाएक प्रकट होने का काम कर रहे हैं। इनमें से तो कुछ भावी पार्षद उम्मीदवार ऐसे हैं जिनको अपने वार्ड की भौगोलिक स्थिति का भी ज्ञान नहीं है जो वार्ड बंदी से पहले की है। ऐसे नेता सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए तरह तरह के हथकंडे अपना रहे हैं।

भाजपा, कांग्रेस, आप पार्टी, निगम चुनाव में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने को तैयार है। भारत जोड़ो यात्रा के जरिए राहुल गांधी उन नेताओं को संजीवनी बूटी दे गए जो कहते थे कि पार्टी में अब दम नहीं रहा। हरियाणा में यात्रा को मिले प्यार से अन्य दल कांग्रेस को लेकर सचेत दिख रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस निगम चुनाव में एक अच्छी संख्या में अपने उम्मीदवारों को जितवा कर निगम सदन में भेज सकती हैं। भाजपा पार्टी शासन में है। भाजपा व जजपा मिलकर निगम चुनाव लड़ेगी या नहीं वो आने वाला समय बताएगा। लेकिन राजनीतिक गलियारों में चर्चा मिलकर चुनाव लड़ने की चल रही है। मिलकर चुनाव लड़ने को लेकर पार्टी नेताओं के बयान भी आ चुके है। सीटों के बंटवारे को लेकर दोनों पार्टी के बीच रस्साकशी हो सकती हैं। जिसका फायदा दूसरी पार्टी को मिलना स्वभाविक है। शासन में होने के नाते भाजपा में कई कार्यकर्ता पार्षद उम्मीदवार की दावेदारी दिखा रहे हे।

ये नेता अपने स्थानीय आलाकमान के सभी कार्यक्रमों में अपनी हाजरी लगवाने में पीछे नहीं रहते । अब यह देखना होगा कि आलाकमान अपने चाहने वालों को चुनाव लड़वाती है या फिर जनता के बीच रहने वाले कार्यकर्ता को। दिल्ली से सटे होने के कारण आप भी पहले से जिले में काफी मजबूत लग रही है।

दिल्ली निगम चुनाव में बहुमत के कारण यहां कार्यकर्ताओं में काफी जोश है। पार्टी के अंदर कुछ ऐसे पुराने चेहरे हैं जिन्होंने पार्टी को खड़ी करने में काफी योगदान दिया है। आप भी जिले में निगम चुनाव में जादुई करिश्मा दिखा सकती हैं। आज़ाद उम्मीदवारों का भी निगम चुनाव में बहुत बोलबाला रहता है। आज़ाद उम्मीदवार पार्टियों के उम्मीदवारों पर कई बार भारी पड़ते दिखे हैं। ये उम्मीदवार वार्ड की जनता में लोकप्रिय होते हैं और अपनी छवि के बलबूते सदन में पहुंचते हैं। पार्षद पद राजनीति में बड़ा नेता बनने की पहली सीढ़ी होती है। देखना यह होगा कि चुनावों मे कौन भावी पार्षद उम्मीदवार वास्तविक उम्मीदवार बनता है?

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421